पाठ 11

वात्सल्य के पद

आइए सीखें - ■रसों का ज्ञान। ■वात्सल्य रस का ज्ञान। ■कविता का हाव-भाव सहित पाठ। ■अलंकारों का ज्ञान। ■कविता का भाव सहित अर्थ ग्रहण करना।

सूरदास

(1)

मैया, मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसों कहत मोल को लीन्हों तोहि जसुमति कब जायो॥

कहा कहों एहि रिस के मारे, खेलत हौं नहिं जात।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तुम्हरो तात॥

गोरे नन्द, यशोदा गोरी, तुम कत श्याम शरीर।
तारी दै-दै हँसत ग्वाल सब, सिखै देत बलवीर॥

तू मोही को मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै।
मोहन-मुख रिस की ये बातें जसुमति सुन-सुन रीझै॥

सुनहु श्याम बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत।
सूर-श्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत॥

(2)

मैया री, मोहि माखन भावै।
जो मेवा पकवान कहति तू, मोहि नहीं रुचि आवै॥

ब्रज जुवती इक पाछैं ठाढ़ी, सुनत श्याम की बात।
मन-मन कहति कबहुँ अपनै घर देखों माखन खात॥

बैठे जाई मथनियाँ के ढिंग मैं तब रहों छपानी।
सूरदास प्रभु अन्तरजामी ग्वालिनि मन की जानी॥

सूरदास हिन्दी ही नहीं संसार की सभी भाषाओं में वात्सल्य रस के अद्वितीय कवि हैं। सूरदास जी के विभिन्न पदों में कृष्ण चरित्र का वर्णन मिलता है। उन्होंने सूरसागर की रचना भी की है।

-सूरदास

शिक्षण संकेत - ■रस की परिभाषा बताकर वात्सल्य रस के बारे में बताइए। ■भक्तिकालीन कवियों के बारे में बताइए। ■पदों को हाव-भाव लय और उचित आरोह-अवरोह को पढ़कर सुनाइए। ■माँ अपने बच्चों के लिए क्या-क्या करती है। बच्चों से चर्चा कीजिए।

रसखान

(3)

आज गई हुती भोरहि हौं रसखानि रई कहि नन्द के भौनहिं।
बाकौ जियौ जुग लाख करोर, जसोमति कौ सुख जात कहो नहि॥
तेल लगाई, लगाई के अंजन भौंह बनाई, बनाई डिठौनहिं।
डालि हमेलनि हार निहारत, बारत ज्यों पुचकारत छौनहिं॥

रसखान

रसखान कृष्ण भक्त थे। इन्होंने अपनी कृतियों में कृष्ण के विभिन्न रूपों का सुन्दर वर्णन किया है। इनकी रचनाओं से सुजान, रसखान, प्रेमवाटिका आदि प्रमुख हैं।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में खोजकर लिखिए-

जायो -	रिस -	पुनि-पुनि -	सौं -
दाऊ -	एहि -	हौं -	भावै -
जुवती -	ढिंग -	छपानी -	हुती -
रई -	कहि -	भौनहिं -	वाकौ -
अन्जन -	डिठौनहिं -	हमेलानि -	पुचकारत -

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) कृष्ण, माँ यशोदा से किसकी शिकायत कर रहे हैं?

(ख) बलराम कृष्ण को क्या कहकर चिढ़ाते हैं?

(ग) यशोदा कृष्ण पर क्यों रीझ रही हैं?

(घ) यशोदा ने गोधन की कसम खाकर क्या कहा?

(ङ) कृष्ण को किन चीजों के प्रति अरुचि है?

(च) ब्रज युवती के मन में क्या इच्छा है?

(छ) गोपी प्रातः कहाँ गई थी?

(ज) यशोदा कृष्ण का किस तरह शृंगार कर रही हैं?

2. दिए गए चार उत्तरों में से सही उत्तर छाँटकर लिखिए -

(क) कृष्ण को कौन चिढ़ा रहा है?

(1) सुदामा (2) नन्दबाबा (3) ग्वालबाल (4) बलराम

सही उत्तर.....

(ख) कृष्ण को क्या अच्छा लगता है?

(1) दूध (2) दही (3) माखन (4) छाछ (मट्ठा)

सही उत्तर.....

(ग) यशोदा किसका शृंगार कर रही है?

(1) बलदाऊ (2) कृष्ण (3) उद्धव (4) मनसुखा

सही उत्तर.....

3. रिक्त स्थान भरिए

(क) कहा कहो एहि रिस के मारे.....हौं नहि जात।

(ख) तारी दै-दै हँसत ग्वाल सब सिखै देत.....।

(ग) सूर.....मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत।

(घ) सूरदास प्रभु अन्तरजामी.....मन की जानी।

(ङ) तेल लगाई, लगाई के अंजन.....बनाई, बनाई डिठौनहिं।

4. इन पंक्तियों का अर्थ के साथ मिलान कीजिए -

	पंक्ति		अर्थ
1.	मोहन मुख रिस की ये बातें जसुमति सुन-सुन रीझे।	1.	श्याम सुनो, बलभद्र जन्म से चुगल-खोर और धूर्त है।
2.	मोसों कहत मोल को लीन्हों।	2.	मथनिया के पास बैठकर मैं छिप जाऊँगी।
3.	सुनहु श्याम बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत।	3.	तुम लाख करोड़ वर्षों तक जियो उस यशोदा माँ के सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता।
4.	बैठे जाई मथनियाँ के ढिंग मैं तब रहो छपानी।	4.	मोहन के मुख से क्रोध की बातें सुन-सुन कर माता यशोदा खुश होती हैं।
5.	बाको जियो जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कहो नहिं।	5.	मुझसे कहता है कि मुझे खरीदा गया है।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों में स्थानीय बोली (ब्रज) और मानक भाषा के शब्द दिए गए हैं। दिए गए उदाहरण के अनुसार उनके सही जोड़े मिलाइए -

तारी, माखन, मक्खन, ठाढ़ी, भवन, भौन, जुग, करोड़, ताली, युग, युवती, खड़ी, जुवती, पूत, पुत्र।

जैसे - **तारी - ताली**

2. इस पाठ में से अनुप्रास अलंकार के कुछ उदाहरण छाँट कर लिखिए।

3. कुछ शब्द युग्म परस्पर मिलते-जुलते अर्थ वाले होते हैं और कुछ विपरीत (विलोम) अर्थ वाले तथा कुछ पुनरुक्त शब्द युग्म होते हैं। उदाहरण देखिए -

(क) परस्पर मिलते जुलते शब्द युग्म - अच्छा-भला

(ख) परस्पर विपरीत अर्थवाले शब्द युग्म - अपना-पराया

(ग) पुनरुक्त शब्द युग्म - अपना-अपना

ऊपर दिए गए उदाहरणों के अनुसार विभिन्न प्रकार के शब्द युग्म लिखिए।

4. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए -

भैया शरीर मुख पूत भौन भोर

ध्यान से पढ़िए

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।

मोसों कहत मोल को लीन्हों, तोहि जसुमति कब जायो।

अब बताइए

(1) यहाँ कौन, किससे कह रहा है?

(2) इसमें माता और पुत्र के बीच कौन-सा भाव प्रतीत या जाग्रत हो रहा है?

अब जानिए

जहाँ पुत्र या शिशु के प्रति स्नेह भाव का वर्णन हो वहाँ **वात्सल्य रस** होता है। इसके अतिरिक्त गुरु-शिष्य के बीच का स्नेह भी वात्सल्य रस में आता है।

रस

किसी कविता को पढ़ते या सुनते समय हमें आनन्द की जो अनुभूति होती है, साहित्य में उसे **रस** कहा जाता है।

रस के प्रकार

काव्य में रस के **दस प्रकार** हैं तथा प्रत्येक रस का एक-एक स्थायीभाव (मनुष्य के मन में स्थायी रूप से स्थित भाव) है।

रस	स्थायी भाव
शृंगार रस	रति
हास्य रस	हास (हँसी)
करुण रस	शोक
रौद्र	क्रोध
वीर	उत्साह
भयानक	भय
अद्‌भुत	विस्मय (आश्चर्य)
वीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)
शान्त	शम, निर्वेद
वात्सल्य	वत्सल

5. इस पाठ के अतिरिक्त आपकी पाठ्यपुस्तक में से वात्सल्य रस का एक उदाहरण लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. वात्सल्य रस से संबंधित अन्य कवियों की रचनाएँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।
2. सूरदास एवं रसखान के अन्य पदों को याद कीजिए एवं बाल सभा में सुनाइए।
3. भक्तिकालीन कवियों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।
4. विभिन्न रसों की कविताएँ एवं पद एकत्र कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

बालक की प्रथम गुरु माता है।